A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 02, April 2026 (Special Issue)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

भारतीय संगीत में घराना परंपरा

Dr. Aruna Shrimali
Assistant Professor of Music, Shri Parasmal Bohra Netraheen Mahavidyalaya, Chokha, Jodhpur

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Published on 30 April, 2026

सार

भारतीय संगीत की यह विशेषता कही जा सकती है कि इसमें कलाकार शास्त्रबद्ध होते हुए भी आलाप, बोल-आलाप, तान, बोलतान आदि में गमक, मीण्ड, खटका, कण, मुर्की आदि का प्रयोग करते हुए अनेक प्रकार के चमत्कार व वैचित्र आदि दिखाकर अपनी कल्पना से राग रूपी सौंदर्य प्रतिमा का निर्माण अपने स्वभाव, प्रकृति एवं कला कौशल के बल पर करता है। अनेक महान गायको द्वारा निर्मित की गई विशिष्ट गायकियां ही कालांतर में उनके सुयोग्य शिष्यों द्वारा आत्मसात करके अपने गायन में अपने गुरु की छाप या विशिष्ट सौंदर्य को पुष्ट करते हुए उन्हें लोकप्रिय बनाया गया। धीरे-धीरे वही गायकियां उन गुरुओं के अथवा उनके निवास-स्थान के नाम से विशिष्ट घरानो के रूप में पहचानी जाने लगी। इन घरानों को खतरा तब महसूस होने लगा, जब एक ही घराने के अलग-अलग संगीतग्यो ने अपनी अलग गायन शैली अपना ली। दीमक जैसे लकड़ी को धीरे-धीरे खोखला बना देती है, उसी तरह जिन घरानों को बनाने में 100 से लेकर 200 साल लगे, उन घरानों की चारदिवारी आज बुरी तरह दरक चुकी है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में खासकर घरानों के मामले में, पिछले 30 सालों में जितने बदलाव हुए हैं, उतने 200 सालों में नहीं हुए।

शोध प्रविधि :इस आलेख के लिए पुस्तकों, प्राथमिक एवं ऑनलाइन स्रोतों से सहायता ली गई है। इस लेख में वर्णनात्मक और विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

कुंजी शब्द: घराना, गायकी, विकास, शिष्य-परंपरा, वर्तमान स्थिति

भूमिका

भारतीय संगीत में घराने की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ताल, लय, स्वर, राग आदि एक समान होते हुए भी उनके संयोजन तथा सूक्ष्म लगाव से गायकी के भिन्न-भिन्न रूप तैयार हो जाते हैं। कई वर्षों की परंपरा, उच्च कोटि के गुरु और लगभग तीन पीढियों की गुरु-शिष्य परंपरा से मिलकर एक 'घराना' बनता है। घरानों की तालीम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था - कड़ा अनुशासन। प्रत्येक घराना अपने आप को सर्वश्रेष्ठ समझता था और अपने शिष्य को किसी अन्य घराने से संपर्क रखने की अनुमति नहीं देता था। परिणाम स्वरूप शिष्यों को अपने ही घराने की गायकी सुनने और तदनुसार रियाज करते रहने से उसकी गायकी में उस घराने के अधिकांश गुणों का समावेश हो जाता था। हर घराने में तीन संगीतकार अवश्य होने चाहिए - गुरु अर्थात संस्थापक, उसके शिष्य और फिर शिष्य का शिष्य।

शरच्चंद्र श्रीधर परांजपे के अनुसार, 'घराना' रीति या शैली का ही दूसरा नाम है। घराना एक विशिष्ट गायन शैली का सूचक होता है। यह शैली या रीति जिस कलाकार के द्वारा प्रवर्तित होती है, वह ही उसके संस्थापक माने जाते हैं और उन्हीं के नाम से अथवा निवास स्थान से घराने का नामकरण होता है। घराने का उद्भव तब होता है, जब घराने की शैली में कोई विलक्षणता हो। (1)

ग्वालियर घराना अनेक घरानों का स्रोत रहा है। ग्वालियर से ही आगरा घराना निकला और आगरा घराने से सहारनपुर तथा खुर्जा घराने निकले। अतरौली घराना भी आगरा घराने के समीप ही था। आगरा घराने के संस्थापक घग्गे खुदा बख्श ने ख्याल गायन की शिक्षा ग्वालियर घराने के नत्थन पीरबक्श से ही ली थी। किराना घराने की गायकी पर भी ग्वालियर घराने का कुछ असर रहा है। जब अब्दुल करीम खान मिरज (महाराष्ट्र) आकर रहने लगे तो ग्वालियर घराने के हद्दू खां के बेटे रहमत खां की गायकी से बहुत प्रभावित हुए, जिससे उनकी गायन शैली में एक नया मोड़ आया

ग्वालियर घराना

यह घराना अपने गायन में सादगी, बोधगम्यता, गंभीरता और कड़े अनुशासन के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसमें स्थाई और अंतरा एक साथ गाते हैं, फिर राग का विस्तार किया जाता है। यह विस्तार भी क्रमानुसार होता है। (2) इस घराने की गायकी की अन्य विशेषताओं में जोरदार तथा खुली आवाज का गायन, ध्रुपद अंग के ख्याल, सीधी-सपाट एवं दानेदार ताने, बोलतानों में लयकारी गमक का सुंदर प्रयोग आदि शामिल है। यह घराना खासकर तीनों सप्तकों में बिना बंधन के स्वरों के संचरण के लिए प्रसिद्ध है। इस गायकी को उचित ही 'अष्टांग' कहा जाता है, क्योंकि इसमें गमक, मीण्ड, मुर्की, लयकारी, तान, बोलतान, आलाप और बोल आलाप शामिल है। (3)

नत्थन पीर बख्श और हद्दू हसू खां को ही इस घराने को आगे बढाने का श्रेय जाता है। (4) तत्पश्चात निसार हुसैन खां, शंकर राव पंडित, एकनाथ पंडित (5) राजा भैया पूछ वाले, बालाभाऊ उमड़ेकर, बालासाहेब पूंछवाले, एकनाथ सरोलकर, नारायण राव पंडित, चंद्रकांत पंडित (6) वासुदेव

जोशी, बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर, विष्णु दिगंबर पलुस्कर, डी.वी. पलुस्कर, मिरासी बुआ, अनंत मनोहर जोशी, शंकर राव पंडित, गणपत राव पंडित, एकनाथ पंडित, कृष्ण राव शंकर पंडित, काशीनाथ मूले, बालाभाऊ उमड़ेकर, रामकृष्ण बुवा बझे, भाऊराव जोशी, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. नारायण राव व्यास, प्रोफेसर बी.आर. देवधर, पं. वामन राव पाधेय, पं. शंकर श्रीपाद बोडस, प्रेमलता शर्मा, एन. राजम, बलवंत राय भट्ट, पं. मल्लिकार्जुन मंसूर, पंडित बसवराज राजगुरु, पं. शरद चंद्र आरोलकर, लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित, सुमन चौधरी, नारायण राव, लक्ष्मण राव, चंद्रकांत, सदाशिव, विष्णु पंत चौधरी, नारायण राव पटवर्धन, सुनंदा पटनायक (7) मालिनी राजुरकर, गोविंद राव राजुरकर, लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित, मीता पंडित, सुमति मुटाटकर, विद्याधर व्यास, वीणा सहस्त्रबुदधै (8) पं. बी. एन. क्षीरसागर, (9) पं. यशवंत बुआ क्षीरसागर, पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग, (10) डॉ कौमुदी बर्डे, डॉ मंजूश्री खेरडे, श्री दीपक क्षीरसागर आदि ने भी ग्वालियर घराने की ख़्याल-गायकी को निरंतर आगे बढ़ाया और बढ़ा रहे हैं l

आगरा घराना

गायकी में सरलता, संयम, संतुलन, लागडांट, खुली एवं जोरदार आवाज में एक के बाद एक रोबीली एवं आक्रामक ताने आगरा घराने की प्रमुख विशेषताये है l इस घराने के संगीतकार ख्याल के साथ ही ध्रुपद, धमार और ठुमरी गाने में भी कुशल रहे हैं l इसी कारण उनके ख्याल गायन पर भी ध्रुपद धमार की लयकारी और नोम-तोम का स्पष्ट प्रभाव पाया जाता है l लयकारी के साथ ही बोल अंग का विस्तार और बोल के साथ पलटों की बढ़त तथा ताल के विभिन्न खंडों से तान की उपज शुरू करना इस घराने की खास विशेषता रही है l (11)

इस घराने का मूल अकबर के दरबारी गायक सुजान खां से माना जाता हैं l आगरा घराने की गायकी के प्रचार प्रसार और उसे समृद्ध करने का श्रेय घघे खुदाबख्श को ही जाता है l आगरा घराने में अब तक ध्रुपद धमार होली-आलाप ही गाया जाता था l घघे खुदाबख्श ने इसमें स्थाई ख्याल गायन की परंपरा डाली l (12)

तत्पश्चात पं. विश्वंभरदीन, भास्कर बुवा बखले, एस एन रतनजंकर, अता हुसैन खां, स्वामी बल्लभ दास, जगन्नाथ बुवा पुरोहित, गुलाम हैदर खां, उस्ताद फैयाज खां, विलायत हुसैन खां, श्री कृष्ण नारायण रतनजंकर, दिलीप चंद्र वेदी, शराफत हुसैन खां, पं. चिंतामणि आर व्यास, राम राव नायक, पं. जितेंद्र अभिषेकी, यूनुस हुसैन खां, आरिफ हुसैन, आसिफ हुसैन खां, दीपाली नाग, एम.आर. गौतम आगरा घराने की गायकी को आगे बढ़ा रहे हैं l (13)

किराना घराना

इस घराने का आरम्भ सुप्रसिद्ध बीनकार एवं ध्रुपद गायक उस्ताद बंदे अली खां से माना जाता है l किन्तु इसे घराने का दर्जा उस्ताद अब्दुल करीम खां और उस्ताद अब्दुल वाहिद खां ने ही दिलाया l स्वरों का सुरीलापन, चैनदारी, गायकी में लगाव, लोच और मीण्ड का काम इस घराने की गायकी में अधिक पाया जाता है l शुद्ध स्पष्ट स्वर शैली, रेशम के समान मुलायम स्वराघात और धीमी बढ़त किराना घराने की विशेषताएं हैं l बोल उपज या लयकारी नहीं के बराबर पाई जाती है l इस घराने के संगीतकार आलाप-प्रधान गायकी और ठुमरी अंग में भी कुशल रहे हैं l (14) खां साहब के बाद सवाई गंधर्व, हीराबाई बडोदकर, गंगूबाई हंगल, माणिक वर्मा, पं. भीमसेन जोशी, प्रभा अत्रे, संगमेश्वर गुरव, नंदीकेश्वर और कैवल्य इस घराने की गायकी को आगे बढ़ा रहे हैं l (15)

जयपुर अतरौली घराना

जूनागढ़ रियासत के दो भाई काले खां और चांद खां अतरौली जयपुर घराने के संस्थापक माने जाते हैं l कुछ विद्वान इस घराने का आरंभ करामत अली और लखनऊ के प्रसिद्ध गायक बड़े मोहम्मद खां के छोटे पुत्र मुबारक अली से मानते हैं, जो जयपुर-दरबार के प्रसिद्ध संगीतकार थे l कुछ लोग मनरंग को, तो कुछ लोग नत्थू खां एवं मानतोल खां को अतरौली-जयपुर घराने का संस्थापक मानते हैं l इस घराने के अन्य गायको में चिम्मन खां, जहांगीर खां, जहूर खां, गुलाब खां, दौलत खां, अली अहमद खां, अल्लादिया खां, बशीर खां, हैदर खां, मंजी खां, भूरजी खां, अजमत हुसैन खां, केसरबाई केरकर, मोगूबाई कुर्डीकर, निवृत्ति बुवा सरनाइक, रत्नाकर पई, ढूंढोताई कुलकर्णी, पद्मावती शालिग्राम गोखले, किशोरी अमोनकर, श्रुति सदोलीकर और उल्हास कशालकर आदि प्रमुख हैं l (16)

खुली आवाज़,ख्याल गायन की विशेष बोलबनाव युक्त अदाकारी, वक्र तानों तथा आलाप की छोटी-छोटी तानों से बढ़त, बोल, उपज तथा अनाघात लय का प्रयोग इस घराने की विशेषता है l (17)

दिल्ली घराना

राग की शुद्धता एवं नियमों का पूर्ण रूपेण पालन, कलापूर्ण ख्याल, बंदिशें, मींड, गमक और लहक का प्रयोग, राग की बढ़त में गहनता, विभिन्न प्रकार की घरानागत तानों का प्रयोग, जैसे- उलझाव की तान, सवाल-जवाब की तान, झूले की तान, फंदे की तान आदि, ताल और लय पर अधिकार इस घराने की प्रमुख विशेषता है l (18)

दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले के जमाने में ख्याल गायकी का आरंभ हुआ l जिसके जन्मदाता नेमत खां 'सदारंग' और फिरोज खां 'अदारंग' माने जाते हैं l दिल्ली के अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ख्याल गायकी के पोषक और अनेक बंदिशों के रचयिता थे l 'शोखरंग' के नाम से रचित उनकी अनेक ख्याल बंदिशें प्रसिद्ध रही है l उन्हीं के गुरु थे मियां अजमल खान उर्फ मियां अचपल जिन्होंने 18 वीं सदी के अंत में दिल्ली घराने की स्थापना की l

मियां अचपल के शिष्य थे उस्ताद तानरस खां, जिन्होंने इस घराने को आगे बढ़ाया l उनका वास्तविक नाम कुतुब बख्श था l उस्ताद तानरस खां ने अपने बेटे उमराव खां के अलावा 'अलिया- फत्तू' के नाम से प्रसिद्ध अलीबख्श और फतेह अली को संगीत की तालीम दी थी l इस घराने के अन्य संगीतज्ञ में सादिक खां, मुराद खां, बहादुर खां, दिलावर खां, पन्नालाल गोसाई, नूर खां, वजीर खां, निसार अहमद खां, बुंदू खां, चांद खान मोहम्मद खां, नसीर अहमद खां, जफर अहमद खां, इकबाल अहमद खां आदि के नाम उल्लेखनीय है l (19)

पटियाला घराना

रचनाओं में चपलता, अलंकारिक वक्र तथा फिरत की तानों का प्रयोग, छोटे ख्यालों की कलापूर्ण बंदिशें, गायन में पंजाब का अंग या टप्पा शैली का प्रभाव, ठुमरी गायन में निपुणता, तैयार तानों का अधिक प्रयोग पटियाला घराने की गायकी की विशेषताएं हैं l (20)

अनेक संगीतकार पटियाला घराने को दिल्ली घराने का ही एक हिस्सा मानते हैं l उनका कहना यह है कि पटियाला के संगीतकारो को संगीत की शिक्षा देने वाले उस्ताद तानरस खां थे l उस्ताद तानरस खां ही 'अलिया फत्तू' के नाम से मशहूर संगीतकार द्वय के गुरु थे l इसी जोड़ी ने पटियाला घराने को आगे बढ़ाया l कहा जाता है कि 1857 में जब भयंकर राजनीतिक उथल-पुथल हुई और दिल्ली में असुरक्षा तथा अस्त-व्यस्तता की स्थिति उत्पन्न हो गई तो यहां रहने वाले कलाकारों ने पड़ोसी पंजाब प्रांत में और विशेष रूप से पटियाला रियासत में पनाह ली l

मिर्ज़ा ग़ालिब और तानरस खां भी इसी दरबार में कुछ समय तक रहे l तानरस खां ने अलिया फत्तू के अलावा कालू खान उर्फ बड़े मियां और नबी बख्श को भी संगीत की शिक्षा दी l इसलिए पटियाला घराने का आरंभ तानरस खां से माना जाता है l बाद में पंजाब के स्थानीय शैलियों से प्रभावित होने के कारण 'पंजाब का घराना' बन गया और पटियाला रियासत में पनपने के कारण वही 'पटियाला घराना' कहलाया l इस घराने के गायको ने ग्वालियर, दिल्ली, जयपुर और लखनऊ घरानों की विशेषताओं को एक जगह समेटा l पटियाला घराने के 'अलिया फत्तू' वास्तव में अलीबखश और फतेह अली थे, जो कालू खां उर्फ बड़े मियां के बेटे थे l

इस घराने के गायको में आशिक अली खां के पुत्र उम्मेद अली खां, बड़े गुलाम अली खां के तीन भाई मुबारक अली, बरकत अली और अमान अली, बड़े गुलाम अली के पुत्र मुनव्वर अली खां, ताराप्रसाद घोष, शैलेंद्रनाथ बंदोपाध्याय, प्रसून बनर्जी, मीरा बनर्जी, संध्या मुखर्जी, अजय चक्रवर्ती, रमा दत्त आदि शामिल हैं l (21)

इंदौर घराना

इंदौर घराने में लय पर अधिक जोर दिया गया l इंदौर घराने की गायकी की शुरुआत मेरूखंड- शैली से हुई l इस घराने के मुख्य प्रतिनिधि देवास के उस्ताद रज्जब अली खां माने जाते रहे हैं l उस्ताद अमीर खां को भी इसी घराने का माना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने पिता सुप्रसिद्ध सारंगी-वादक उस्ताद शाहमीर खां से तालीम ली थी, जो इसी घराने के थे l इस घराने में आलापचारी को अधिक महत्व दिया गया क्योंकि यह मूल रूप से वादकों का घराना रहा है l उस्ताद रज्जब अली खां मूलतः ख्याल गायक थे, मगर वे जलतरंग और बीन भी बजाते थे l इस घराने के प्रचार प्रसार में उस्ताद बंदे अली खां, अमानत खां, कृष्ण राव मजूमदार, मधुकर गुलवानी, खंडेराव सूपकर, सुधा भंडारी, गणपतराव देवासकर, गणेश रामचंद्र, बहरे बुवा, अमीर खां, पंडित अमरनाथ, श्रीकांत बाखरे, कंकणा बनर्जी, सिंह बंधु यानी तेजपाल सिंह और सुरिंदर सिंह आदि का प्रमुख योगदान रहा है l (22)

रामपुर-सहसवान घराना

दोनों घराने ग्वालियर घराने की गायकी से काफी हद तक प्रभावित रहे हैं l रामपुर घराने की शुरुआत के बारे में अलग-अलग मत हैं l आचार्य बृहस्पति के अनुसार, इस घराने की स्थापना नेमत खां 'सदारंग' द्वारा हुई l एक अन्य मत के अनुसार मियाँ तानसेन के वंशज वजीर खां ने इस घराने की शुरुआत की l कुछ लोग प्यार खां और उनके भांजे एवं दत्तक पुत्र बहादुर हुसैन खां को इस घराने का संस्थापक बताते हैं l इस प्रकार रामपुर घराने की शुरुआत सदारंग से होते हुए बहादुर हुसैन खां और उनके पुत्र अमीर खां एवं उनके पुत्र वजीर खां से मानी जा सकती है l तत्पश्चात हाफिज अली खां, अलाउद्दीन खां, प्यारे मियां, सगीर खां, दबीर खां, नसीर अली, मोहम्मद हुसैन, अब्दुल रहीम, इनायत हुसैन खां, मुश्ताक हुसैन खां, छज्जू खां, नजीर खां, खादिम हुसैन, फिदा हुसैन खां, हैदर खां, अमान अली खां, भैया गणपत राव, निसार हुसैन खां, रशीद अहमद खां, हाफिज अहमद खां, गुलाम साबिर, गुलाम मुस्तफा, सरफराज हुसैन खां, आफताब अहमद खां, गुलाम मुर्तजा और गुलाम कादिर खां, मन्ना डे, आशा भोंसले, कमल बारोट, गीता दत्त, रानू मुख़र्जी, हरिहरन, लक्ष्मी नायमपल्ली, हफीज अहमद खां और सुलोचना यजुर्वेदी ने इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाया l (23)

This paper was presented at the 'Swar Sanskar National Seminar', organized by Swar Sanskar Sangeet Gurukul
Seminar Convener: Dr. Yash Sanjay Dewale (Co-Founder: Swar Sanskar Sangeet Gurukul, Assistant Professor: MSU Baroda)

मेवाती घराना

सुरों को लगाने का स्पष्ट तरीका, कण युक्त छोटी-छोटी मुरकिया, भारी जमजमे, गूथाव से सजी हुई शैली, सुरों में मीण्ड का आधिक्य, शब्दों की स्पष्टता मेवाती घराने की विशेषता रही है l राजस्थान, हरियाणा, अजमेर के कुछ स्थानों का मिला हुआ हिस्सा 'मेवात' कहलाता है, जहां के निवासी मेवाती कहे जाते हैं l मेवाती घराने के संस्थापक उस्ताद घघ्घे नजीर खां को माना जाता है l तत्पश्चात इस घराने की गायकी को आगे बढ़ाने में पं. नत्थूलाल, पं. ज्योतिराम, पं. मोतीराम, पं. प्रतापनारायण, पं. राजाराम, पं. जसराज, चुन्नीलाल, धीरज लाल, शंकर राव मेधे, संजीव अभ्यंकर, श्वेता झवेरी, रतन शर्मा, नीरज पारीक, गार्गी सिद्धांत, तृप्ति मुखर्जी, हेमांग मेहता आदि शामिल है l (24)

बनारस घराना

भारतीय संगीतज्ञ ख्याल गायन में बनारस का कोई अलग घराना नहीं मानते l प्रथम कारण तो गायन में बनारस की ठुमरी, टप्पा, कजरी और चैती ज्यादा मशहूर रही है और द्वितीय कारण दिल्ली घराने की तरह बनारस के सारंगी-वादक और तबला-वादक ज्यादा लोकप्रिय रहे हैं l बनारस घराने की बंदिशें और उनका अनोखा चलन अन्य घरानों से अलग है l इस घराने में राग की शुद्धता को बनाए रखते हुए उसे कल्पनाशीलता और सृजनशीलता से सजाया जाता है l इसके साथ ही, रागों में स्वर-लगाव के अलावा लय की चलन पर विशेष ध्यान दिया जाता है l इस घराने की आमद वाली गायकी का अपना अलग ही ढंग है l हर घराने की गायकी की खूबियों की झलक बनारस घराने की गायकी में पाई जाती है l इस घराने के संगीतग्यो में पं. दिलाराम मिश्र, शिवदास प्रयाग जी, बख्तावर मिश्र, ठाकुर दयाल मिश्र, मनोहर मिश्र, शिव सहाय मिश्र, रामसेवक मिश्र, राम कुमार मिश्र, दरगाही मिश्र, ठाकुर प्रसाद मिश्र, लक्ष्मीदास मिश्र, पशुपति सेवक मिश्र, शिव सेवक मिश्र, रामकृष्ण मिश्र, भानु सेवक मिश्र, विष्णु सेवक मिश्र, मिठाई लाल मिश्र, बड़े रामदास मिश्र, छोटे रामदास मिश्र, महादेव मिश्र, श्री चंद्र मिश्र, सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी, हरिशंकर मिश्र, जालपा प्रसाद मिश्र, अमरनाथ- पशुपति नाथ मिश्र, राजन-साजन मिश्र आदि प्रमुख हैं l (25)

वर्तमान स्थिति

घराने के विरोध में सर्वप्रथम पं.ओंकार नाथ ठाकुर जी का नाम लिया जाता था, जिन्होंने ग्वालियर घराने से शिक्षा लेकर भी अपनी गायकी में किराना और आगरा घराने की गायकी को समाहित कर लिया था l इसी घराने के पं. कृष्ण राव शंकर पंडित और राजा भैया पूछवाले की गायन शैली भिन्न-भिन्न थी l ठीक इसी प्रकार किराना घराने के उस्ताद अब्दुल करीम खां और उस्ताद अब्दुल वाहिद खां की गायन शैली में भी अंतर था l उसका बड़े गुलाम अली खां, उस्ताद अमीर खां, पं. कुमार गंधर्व, पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, किशोरी अमोनकर आदि संगीतग्यो ने न सिर्फ स्वयं को घराने की जंजीरों से आजाद होने दिया, बल्कि सृजनशीलता का अच्छा उदाहरण देते हुए संगीत जगत में उल्लेखनीय योगदान भी दिया है l घरानों का सबसे बड़ा फायदा यह था कि कलाकार आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित थे l जैसे जैसे समय बदला देसी रियासतों एवं रजवाडों के समाप्त होने के बाद सरकारी संरक्षण मिलने लगा l रेडियो में नौकरी मिलने के अलावा रेडियो द्वारा आयोजित वार्षिक संगीत सम्मेलनों से भी अनेक संगीतज्ञों को ख्याति मिली l किन्तु जीवनयापन हेतु रोजी-रोटी जुटाने का काम भी संगीतज्ञों के ही जिम्में हो गया l आज अधिकांश संगीतज्ञ आर्थिक दृष्टि से एकदम असुरक्षित हैं l सरकार उन्हें कोई पेंशन नहीं देती l लिहाजा संगीत समारोह में भाग लेने के अलावा उनके पास और कोई उपाय नहीं है l रेडियो के आने के बाद हर पान की दुकान और हर घर के ड्राइंग रूम में संगीत गुंजने लगा l साथ ही सार्वजनिक संगीत समारोह भी धड़ल्ले से शुरू हो गए l इसका परिणाम यह हुआ कि घरानों की बंदिशें आम हो गई l (26)

आज संचार के माध्यम इतने हैं कि लोगों के कान खराब हो गए हैं l एक ही दिन में अनेक लोगों का भांति भांति प्रकार का गायन सुनना तथा किसको अपनायें किसको छोड़े, एक खिचड़ी बन गयी है l घरानेदारी वाली बात इस माहौल में भला क्या ही बचेगी ? वैसे भी घराना परम्परा आगे चलना मुश्किल है, क्योंकि अब शिष्यों में पहले जैसी सहनशीलता नहीं है l जिस अनुशासन में शिष्य गुरु के पास चौबीसों घंटे रहकर तालीम हासिल करता था, आज के माहौल में अब वह संभव नहीं है l घराना संरक्षण के सहारे ही जीवित रहता है l आज इस संरक्षण का अभाव है, इसलिए घराने समाप्त होते जा रहे हैं l गुरु अपने बेटे-बेटियों को संगीत नहीं सिखाते, क्योंकि वे नियमित आमदनी के लिए अलग पेशा अपना रहे हैं l हिंदुस्तानी ख्याल-गायकी के कुछ प्रमुख घराने खत्म हो चुके हैं, जबकि कुछ नए घराने सामने आए हैं l इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षण संस्थाओं का रहा है l इसके साथ ही, मंच से गायन ने भी पुरानी घराना-परंपरा को खत्म कर दिया है l आज सारा जोर सीखाने की बजाय मंच से कार्यक्रम प्रस्तुत कर और श्रोताओं की पसंद के आगे झुक कर वाहवाही लूटने पर है l (27)

निष्कर्ष

विशिष्ट गायन शैली से घराने का बीज पड़ा l गुरु-शिष्य परंपरा को 'घराना' कहा गया l मध्यकाल में देशी रियासतें बनी, जहां घरानों का जन्म और विकास हुआ l तानसेन के पूर्व कोई घराना नहीं मिलता l मुगलों का पतन और ब्रिटिश राज्य की स्थापना में छोटी-छोटी देसी रियासतों की स्थापना हो गई l प्रत्येक रियासत में कुछ गायक वादक अवश्य होते थे, जिन्हें राजा को गायन वादन सुना कर खुश करना पड़ता था और बदले में उन्हें राजा से पूर्ण आश्रय मिलता था l वह बड़े आराम से अपनी जिंदगी गुजारते और जब कभी कोई शिष्य उनसे सीखने जाता तो उसे सीखाने में कतराते l केवल वही शिष्य काफी दिनों तक लगे रहने के बाद थोड़ा बहुत सीख पाता जो उस्ताद की सेवा करने में कुछ बाकी ना बचा रखता l

इंद्रधनुष के रंगों की भांति सभी घराने सुंदर हैं l लेकिन हमें घरानों की हदबन्दी में कैद होने की बजाय सर्वव्यापकता या संपूर्णता लाने की कोशिश करनी चाहिए l केवल एक घराने से बंधकर संगीत को उसकी समग्रता में नहीं समझा जा सकता l अलग-अलग घरानों को महत्व देने के स्थान पर गुरु-शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित करना अधिक आवश्यक है l

संदर्भ सूची

1) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभू नाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या- 1-4
2) भारतीय संगीत के अमर साधक 'पं. कृष्ण राव शंकर पंडित'- लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित पृष्ठ संख्या 48-49
3) sathee.iitk.ac.in
4) मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ- प्यारेलाल श्रीमाल, पृष्ठ संख्या 180
5) मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ-प्यारेलाल श्रीमाल, पृष्ठ संख्या 191, 193-194
6) मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ- प्यारेलाल श्रीमाल, पृष्ठ संख्या 202, 204, 211, 219, 222-223
7) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा - शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 8, 9, 11, 12, 14, 21, 26, 35, 40, 46, 52
8) ^http://www.google.com
9) राजस्थान के कला गौरव - रमेश बोराणा, पृष्ठ संख्या 11
10) रसमंजरी शतक - पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग
11) sathee.iit.ac.in
12) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा - शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 53-54
13) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 55-56, 60, 62, 64, 67, 69, 71, 72, 73, 75
14) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 76-77
15) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के घराना परंपरा शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 81-82, 85, 89, 93, 95, 97
16) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 98
17) sathee.iit.ac.in
18) sathee.iit.ac.in
19) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 124-125
20) sathee.iit.ac.in
21) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 115-116
22) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 132-144
23) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 146-157
24) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र, पृष्ठ संख्या 158 व 164
25) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र पृष्ठ संख्या 165-166
26) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र पृष्ठ संख्या 192-193
27) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा- शंभूनाथ मिश्र पृष्ठ संख्या 193-195